प्रचारक/ऐल्डर सम्बन्ध

हाल ही में एक प्रचारक को जिसने कई साल तक एक मण्डली में काम किया था सेवक के साथ - साथ एक ऐल्डर के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया। एक दिन भोजन करने के लिए इकट्ठे हुए इलाके के अन्य प्रचारकों ने उसे बधाई दी। वह उनकी बधाई स्वीकार करने के लिए खड़ा हुआ और कहने लगा, ''मुझे ऐल्डर बने एक सप्ताह हो गया है, और मैं प्रचारकों से घृणा करता हूं!''

मज़ाक में व्यक्त किया गया उसका आचरण कई बार सचमुच में ऐल्डरों में पाया जाता है। कई बार यह भावना उल्ट होती है। कई प्रचारक जिन्हें लगता है कि ऐल्डर उन्हें गलत कहते हैं, ऐल्डरों की तारीफ़ नहीं कर पाते। एक दूसरे पर भरोसा न करने के परिणाम स्वरूप (या कारण) मण्डलियों में ऐल्डरों और प्रचारकों के बिगड़े सम्बन्धों के कारण बहुत सी समस्याएं पैदा हो जाती हैं।

इस पाठ का गंभीर विषय यह है कि यदि प्रचारक और ऐल्डर अपने सम्बन्धों को सुधार लें तो इन समस्याओं को रोका जा सकता है। ये सम्बन्ध कैसे सुधर सकते हैं? कुछ बातें जो करनी आवश्यक हैं, वे ये हैं।

मसीह जैसा व्यवहार करना

कलीसिया के सब अगुओं को मसीह जैसा व्यवहार अपनाने की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह होगा कि वे अपने आपको सेवकों के रूप में देखेंगे और व्यक्तिगत अधिकार, सज़ा या शान के लिए नहीं लड़ेंगे। वे ध्यान रखेंगे कि यीशु ने कहा था, ''जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने'' (मत्ती 20:26) और यह कि यीशु ने अपने चेलों के पांव धोकर उन्हें भी ऐसा ही करने के लिए कहा था (यूहन्ना 13:13-17)। सबसे बढ़कर एक सेवक का व्यवहार, घमण्ड से पैदा होने वाले तूफ़ानों को जिनसे ऐल्डरों और प्रचारकों के बीच सम्बन्ध बिगड़ते हैं, शांत कर देगा।

मसीह के व्यवहार वाले ऐल्डर और प्रचारक अपनी निजी भलाई की फिक्र छोड़कर यीशु की तरह ही जिसने कलीसिया से इतना प्रेम किया कि उसने इसके लिए अपना प्राण दे दिया, कलीसिया की भलाई को आगे रखेंगे (इफिसियों 5:25)। जिसका नतीजा यह होगा कि वे इस बात को समझ जाएंगे कि कलीसिया उनकी निजी भावनाओं से अधिक महत्वपूर्ण है।

इस सम्बन्ध में ऐल्डरों और प्रचारकों दोनों को परमेश्वर द्वारा दिए गए उनके ''पदों'' के महत्व को समझने की आवश्यकता है अर्थात यह कि वे इन पदों पर कहां पर खरे नहीं उतरते। इसलिए यदि किसी ऐल्डर में अगुआई करने का गुण है, तो उसकी यह ज़िम्मेदारी

है कि वह इसका इस्तेमाल करे, परन्तु यदि कलीसिया उसकी अगुआई नहीं लेना चाहती है तो उसे इसके लिए जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए। किसी प्रचारक में सुसमाचार सुनाने का गुण हो सकता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि यदि उसके प्रचार से किसी मण्डली में कोई समस्या पैदा होती है तो वह वहीं पर ही प्रचार करता रहे। वह कहीं दूसरी जगह जा सकता है। दोनों मामलों में बड़ा प्रश्न यह है कि *कलीसिया की बेहतरी किस बात में है?*

ऐल्डरों और प्रचारकों के सम्बन्ध को समझना

ऐल्डर और प्रचारक तय कर सकते हैं कि उनके बीच आदर्श सम्बन्ध कैसा हो सकता है। उन्हें उस आदर्श को पाने की कोशिश करनी चाहिए।

कलीसिया के हर अगुवे की अपनी भूमिका होती है। ऐल्डरों को बुज़ुर्गों (दूसरों से अधिक अनुभव वाले), पास्टरों (चरवाहों), और बिशपों (अध्यक्षों या निरीक्षकों) के रूप में कलीसिया की अगुआई करने की ज़िम्मेदारी मिली है। उनका काम झुंड की अगुआई नमूना देकर, सिखाकर और समझाकर करना है न कि ''उस पर अधिकार करके।'' प्रचारकों की ज़िम्मेदारी कलीसिया में और कलीसिया के बाहर वचन का प्रचार करना और शिक्षा देना है। सुसमाचार प्रचारक अपना अधिकतर समय और प्रयास सुसमाचार को सुनाने में लगाते हैं। ऐल्डरों और प्रचारकों दोनों की भूमिकाएं महत्वपूर्ण हैं। कलीसिया इनमें से किसी के बिना भी नहीं रह सकती और फिर भी वैसी हो सकती है जैसी प्रभु चाहता है।

आदर्श रूप में, ऐल्डरों और प्रचारकों को किसी कलीसिया में एक दूसरे के साथ अपने सम्बन्ध को कैसे देखना चाहिए? ज़्या ऐल्डर काम देने वाले और प्रचारक उनका कर्मचारी होता है? ज़्या उन्हें अपने सम्बन्ध को बॉस/तन्खाह पर काम करने वाला के रूप में देखना चाहिए? उज़र है ''नहीं।'' बेशक कलीसिया और परमेश्वर के प्रति ऐल्डरों की ज़िम्मेदारी यह तय करना है कि मण्डली के लिए कौन प्रचार करेगा, उसे कितना वेतन देना है, उसका काम ज़्या होगा, उसकी ज़्या - ज़्या ज़िम्मेदारियां होंगी, लेकिन ऐल्डरों और प्रचारक के बीच के सम्बन्ध को काम देने वाले/कर्मचारी के रूप में देखने से सम्बन्ध बिगड़ जाता है। न तो प्रचारक को अपने आपको आज़ादी से काम करने वाले के रूप में देखना चाहिए और न ही ऐल्डरों के ऊपर अधिकार रखने वाले या उनसे बड़ा मानना चाहिए।

ऐल्डरों और प्रचारक दोनों के लिए अपने आपको एक दूसरे के सहयोगी, साथ काम करने वाले सहकर्मी, ''[परमेश्वर] के सहकर्मी'' (2 कुरिन्थियों 6:1) मानना चाहिए, जो एक ही उद्देश्य के लिए अपनी - अपनी ज़िम्मेदारी को निभा रहे हैं। उनका लक्ष्य कलीसिया की भलाई के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करते हुए मिलकर काम करना होना चाहिए।

झगड़ों से परहेज़ करना या उन्हें सुलझाना

ऐल्डरों और प्रचारक को झगड़ा उत्पन्न करने वाली बातों का पता होना चाहिए और उन झगड़ों से बचने या उनका समाधान करने के लिए जो भी आवश्यक हो वह करना

चाहिए। झगड़े की जड़ वाली कई बातों पर विचार किया जाना आवश्यक है।[1]

शिक्षा सज़्बन्धी असहमतियां

समस्या: कई बार शिक्षा या यह कि किसी आयत को कैसे समझा जाए, की किसी बात पर ऐल्डर लोग प्रचारक से सहमत नहीं होंगे। जब ऐसा होता है तो आम तौर पर परेशानी उठानी पड़ती है।

समाधान: जहां तक सज़्भव हो ऐल्डरों और प्रचारक को प्रचारक द्वारा किसी बात को मानने से पहले एक दूसरे के दृष्टिकोणों को समझ लेना चाहिए। यदि वे बुनियादी तौर पर एक दूसरे से सहमत नहीं हैं, तो प्रचारक के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह इस बात को माने।

यदि प्रचारक के होने के बाद शिक्षा सज़्बन्धी या पवित्र शास्त्र के विषय में कोई गंभीर झगड़ा पैदा हो जाता है तो ? (1) यदि प्रचारक ने अपने विश्वास के बारे में ऐल्डरों को धोखे में रखा हो तो उसे छोड़ जाने के लिए कह देना चाहिए। (2) यदि प्रचारक ने अपना मन बदल लिया है या उसने उस विषय को नहीं समझाया, तो शिक्षा सज़्बन्धी समस्याएं ''शिक्षा सज़्बन्धी मुद्दों'' वाले पाठ में दी गई बातें लागू हो सकती हैं। (3) यदि लगता है कि किसी अनावश्यक बात पर कलीसिया में फूट को रोका नहीं जा सकता, तो प्रचारक को वहां से जाने को कहा जा सकता है। *किसी निजी व्यक्ति के समर्थन के बजाय प्रभु की कलीसिया की शांति और उन्नति कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।*

भूमिका की उलझन

समस्या: आम तौर पर कलीसिया में विभिन्न अगुओं अर्थात ऐल्डरों, डीकनों और प्रचारकों के काम के सज़्बन्ध में उलझन पाई जाती है। विशेष तौर पर, ऐसी समस्याएं इसलिए उत्पन्न होती हैं ज़्योंकि ऐल्डर मण्डली में प्रचारक की जिज़्मेदारियों पर और इस बात पर कि वह अपना समय कैसे बिताए, सहमत नहीं होते।

समाधान: सबसे बड़ी बात यह है कि इलाज़ से परहेज़ अच्छा है! समस्या का समाधान प्रचारक द्वारा मण्डली के साथ अपना काम करने के आरज़्भ में ही उसे साफ़ तौर पर समझाने से हो सकता है। ऐल्डरों व प्रचारक द्वारा इस बात पर सहमत होने के बाद कि प्रचारक को ज़्या करना होगा यह समझौता लिखित रूप में तैयार करके सज़्बन्धित पक्षों के हस्ताक्षर करवा लेने चाहिए। समय बीतने पर यदि कोई परिवर्तन आता है तो उस परिवर्तन को मूल दस्तावेज में लिख लेना चाहिए।

दूसरी बात, संवाद या एक दूसरे से बात करना आवश्यक है। यदि कोई ऐसी बात सामने आती है जिसके बारे में पहले विचार नहीं किया गया था (और उसे मूल दस्तावेज़ में नहीं लिखा गया था), या मूल दस्तावेज़ महत्वहीन हो गया है, तो ऐल्डरों और प्रचारक को परिस्थिति पर खुलकर बात करनी चाहिए। उनकी बातचीत का द्वार खुला रहना चाहिए।

प्रचारक की असंतुष्टि

समस्या: प्रचारकों के मन में अज़्सर यह धारणा होती है कि ऐल्डरों और/या मण्डली द्वारा उनसे ठीक व्यवहार नहीं किया जा रहा है। इससे प्रचारक छोड़कर जा सकता है। अमेरिका में हमारे भाइयों में किसी प्रचारक के लिए एक मण्डली में थोड़ा समय (दो या तीन या इससे कम वर्ष) रहना अपवाद नहीं बल्कि एक नियम बन चुका है। कलीसिया के विकास का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि प्रचारक के एक कलीसिया में अधिक समय तक रहने से कलीसिया का अधिक विकास हो सकता है।

समाधान: ऐल्डर और प्रचारक मिलकर इस समस्या का समाधान करने के लिए कुछ सहायता कर सकते हैं। प्रचारक कम से कम ये निज़्न बातें कर सकता है:

(1) वह इस बात का अवलोकन कर सकता है कि उसकी अपेक्षाएं कितनी वास्तविक हैं। प्रचारक अज़्सर ''बिगड़े छोकरे'' की तरह लगते हैं जिन्हें जीवन में बहुत कुछ मिला है लेकिन फिर भी वे मांग करते रहते हैं।[2] उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि कोई भी मण्डली ऐसी नहीं है जो सज़्पूर्ण हो और उसमें कोई समस्या न हो। (कोई सिद्ध मण्डली हो भी तो उसके सदस्य सिद्ध प्रचारक को ढूंढ़ते होंगे)!

(2) प्रचारक अपने आप से भी प्रचार करने के प्रति अपनी प्रेरणा व व्यवहार के बारे में पूछ सकता है। यदि वह छोटी - छोटी बात के लिए शिकायत करता है, तो वह अपने आपको आमोस और पौलुस से कैसे मिलाता है?

(3) यदि प्रचारक की शिकायत सचमुच जायज़ है या उसकी ऐसी आवश्यकताएं हैं जो पूरी नहीं होतीं, तो उसे अपने अन्दर आक्रोश जगाने के बजाय, *अपनी ये शिकायतें या आवश्यकताएं ऐल्डरों को बतानी चाहिए।* उसके लिए यह कहकर कि वह वहां काम करने जा रहा है जहां उसे अधिक वेतन मिलेगा, ऐल्डरों को चकित करने के लिए छोड़ने के बजाय, उनसे यह कहना बेहतर है कि ''मेरा वेतन बढ़ाया जाए।''

ऐल्डरों को भी अपना कर्ज़व्य पूरा करना चाहिए। ऐल्डरों के लिए निज़्न सुझाव महत्वपूर्ण हैं:

(1) ऐल्डरों को भी यह देखना चाहिए कि ज़्या प्रचारक को उसकी आवश्यकता के अनुसार वेतन दिया जा रहा है। इसके लिए वाजिब वेतन दिया जाना आवश्यक है। कई बार जब वह किसी बात से हिचकिचाता है या उसे पता नहीं होता कि अपनी देखभाल कैसे करनी है, तो ऐल्डरों को चाहिए कि वे उसकी देखभाल करें।

(2) *ऐल्डरों को इस बात की समझ होनी चाहिए कि (पूर्णकालिक) प्रचारक की भौतिक भलाई उनके हाथ में है!* उसका वेतन बढ़ाया जाता है या नहीं यह उनकी दिलचस्पी पर निर्भर हो सकता है। हो सकता है कि उसके लिए यह जीवन - मरण की बात हो!

ऐल्डर की असंतुष्टि

समस्या: कई बार ऐल्डरों को लगता है कि प्रचारक का उनके प्रति व्यवहार अच्छा नहीं है। हो सकता है कि वे किसी अच्छे प्रचारक को ले आएं जिसकी सेवा वे कई सालों तक

लेना चाहते हों और उसे अच्छा वेतन देने की पूरी कोशिश करें। इसके बदले में हो सकता है कि वह ऐसे बातें करे जैसे वह जीवनभर के लिए वहां रहना चाहता हो। तो भी, पहली बार किसी बड़ी मण्डली में जाने का अवसर मिलने पर वह छोड़कर चला जाता है और फिर ऐल्डरों को नये सिरे से कोई प्रचारक ढूंढ़ना पड़ता है। वे छोड़कर जाने वाले उस प्रचारक पर क्रुद्ध होते हैं और अज़्सर उन्हें लगता है कि उसने ''बड़ी प्राप्ति'' पाने के लिए उनका ''इस्तेमाल'' किया। हो सकता है कि प्रचारक भी अपने आप या अपने विश्वास को सही ढंग से प्रस्तुत न कर पाएं, अर्थात समझौते के अनुसार न रह पाएं (हो सकता है कि यह आलस के कारण हो), कलीसिया से ऐल्डरों के ज्ञान या अनुमति के बिना कोई काम करे (या कोई चीज़ खरीदने), या ऐल्डरों की अनुचित आलोचना करे।

समाधान: इस समस्या का समाधान करने के लिए ऐल्डर निज़्न बातें कर सकते हैं: (1) यह सुनिश्चित करें कि प्रचारक आलसी नहीं है। पहली बात तो यही है कि ऐल्डर ठीक प्रचारक को ढूंढ़ने के लिए अपनी पूरी कोशिश करें। इसके लिए उन्हें लोगों से पूछकर और उस मण्डली के ऐल्डरों से पता लगा लेना चाहिए जहां वह पहले प्रचार करता था। (2) प्रचारक को उनसे लगातार सज़्पर्क बनाए रखने के लिए उत्साहित करें। (3) प्रचारक *और उसके परिवार* को प्रसन्न रखने की पूरी कोशिश करें। साथ ही, उन्हें यह अहसास होना चाहिए कि यदि वह छोड़कर जाने का फैसला करता है तो वे उसे रुकने के लिए किसी तरह भी मजबूर नहीं कर सकते।

सज़्प्रेषण या संवाद की असफलताएं

समस्या: ऐल्डरों और प्रचारक में कई बातों पर समस्याएं खड़ी होती हैं, लेकिन अज़्सर समस्या की जड़ सज़्प्रेषण में आई रुकावट होती है। सज़्प्रेषण या सज़्पर्क बनाए रखने में असफलता के कारण उनके सज़्बन्ध में कई पहलू हो सकते हैं: (1) ऐल्डरों व प्रचारक के बीच हुई प्रारज़्भिक बातचीत अपर्याप्त हो सकती है; हो सकता है कि दोनों पक्षों द्वारा अपनी अपेक्षाएं स्पष्ट न बताई गई हों (2) उसके बाद, हो सकता है कि उनमें बहुत कम वार्तालाप होता हो। वे बहुत कम मिलते या इकट्ठे होते हों। (3) हो सकता है दोनों पक्षों को एक दूसरे की सही समझ नहीं आई हो। बातचीत या सज़्प्रेषण अधिक मात्रा में होने के बावजूद हो सकता है कि यह लाभदायक न हो। ऐल्डरों व प्रचारक दोनों को इस बात की समझ होनी आवश्यक है कि वे चीज़ों को अलग – अलग नज़र से देखें, कि वे अलग – अलग जगह ''से आ रही'' हैं, अलग – अलग दिखाई देती हैं, विशेषकर जब प्रचारक नौजवान हो।

समाधान: इन समस्याओं के भी कई समाधान हैं:

ऐल्डरों व प्रचारक के बीच के सज़्बन्ध तथा ज़िज़्मेदारियों को अच्छी तरह से समझा जाना चाहिए, और सज़्भव हो तो उन्हें लिखकर रख लेना चाहिए। विशेष सुविधाओं, जैसे कि प्रचारक को अवकाश कब दिया जा सकता है और वह स्थानीय कॉलेज में पढ़ाने के लिए जा सकता है या नहीं, पर खुलकर बात होनी चाहिए और प्रचारक द्वारा अपना काम आरज़्भ करने से *पहले* उन पर खुलकर चर्चा होनी चाहिए।

ऐल्डरों और प्रचारक को चाहिए कि कभी – कभी औपचारिक और अनौपचारिक रूप में प्रभु के बारे में बात करें। उनकी बातचीत की एक विशेषता विचारों को व्यज्त करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

ऐल्डरों व प्रचारक दोनों को बातचीत में ईमानदारी तथा दृढ़ निश्चय दिखाना चाहिए (वज़्ता तथा सुनने वाले दोनों के रूप में)। विशेष रूप में, ऐल्डरों को चाहिए कि वे यह प्रभाव न दें कि प्रचारक के जवान, अस्थाई और वेतन पाने वाला होने के कारण वे उससे बराबर के व्यज़्ति की तरह बात नहीं कर सकते। दूसरी ओर, प्रचारक को यह अहसास होना आवश्यक है कि उसकी ज़िज़्मेदारी है कि उस दूरी को मिटाए जिससे ऐल्डर उससे अलग हो सकते हैं।

व्यज़्तित्व की समस्याएं

समस्या: कई बार ऐल्डर और प्रचारक बिना किसी कारण के मिलकर नहीं चलते। ऐसी समस्याएं ज़्यों आती हैं ?

ऐसी समस्याएं कई बार तो केवल उन लोगों की निर्बलताओं या कमियों के कारण आती हैं जो ऐल्डरों और प्रचारकों के रूप में काम करते हैं। सैद्धांतिक रूप में, यदि कलीसिया का हर अगुआ सौ प्रतिशत मसीह के स्वभाव वाला हो, तो ''व्यज़्तित्व की कोई भी समस्या'' कलीसिया को नुकसान नहीं पहुंचा सकती। परन्तु कलीसिया के सभी अगुवे इन्सान हैं और उनसे गलतियां हो जाती हैं। इसलिए उनकी दुर्बलताओं, कमियों और पापों के कारण तनाव व समस्याएं पैदा होती हैं। निज़्न बातों को वे दुर्बलताएं माना जा सकता है जिनसे समस्याएं पैदा होती हैं: आवश्यकता से अधिक संवेदनशील होना; कम जोशीले होना; दयालुता की कमी; क्षमा करने की कमी या पिछली गलतियों या पापों को क्षमा करने की इच्छा न होना; बड़ा बनने की इच्छा; द्वेष और भौतिकवाद।

कुछ समस्याएं कलीसिया के अगुओं के जीवन की व्यज़्तिगत कठिनाइयों के कारण पैदा होती हैं। ऐसी कठिनाइयां उनके एक दूसरे के साथ सज़्बन्ध को प्रभावित करती हैं जिस कारण कलीसिया प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, मेरे घर में जो होता है, उससे आपके साथ मेरा सज़्बन्ध प्रज़ावित होता है। यदि मैं प्रचारक हूं या कोई ऐल्डर और मेरी पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ है ... या यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है ... या मुझे धन की कोई समस्या है ... या प्रलोभन या दोष की कोई समस्या है ... या काम से सज़्बन्धित मेरी कोई समस्या है ... या मेरी उम्र या जीवन की स्थिति पर कोई समस्या है ... तो मेरे लिए दूसरे के साथ चलना कठिन लगेगा।

कई समस्याओं का सज़्बन्ध इस तथ्य से होता है कि ऐल्डर और प्रचारक बहुत अलग हो सकते हैं। अन्य समस्याओं में निज़्न ''दूरियां'' उन्हें अलग कर सकती हैं: (1) उम्र का फर्क, (2) शिक्षा में अन्तर या (3) सामाजिक अन्तर अर्थात हो सकता है कि प्रचारक नगर से हों और ऐल्डर देहाती हों।

कुछ समस्याएं व्यज़्तित्व से जुड़ी हो सकती हैं। अलग – अलग लोगों का मिजाज़,

नज़रिया, प्रतिक्रिया करने का ढंग, किसी बात को सुलझाने का ढंग आदि अलग-अलग होता है। उदाहरण के लिए किसी को अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी लोगों में या ''अ किस्म'' और ''ब किस्म'' के लोगों में और उनके व्यज़्तित्व में अन्तर लग सकता है। इन अलग - अलग व्यज़्तित्वों से समस्याएं पैदा हो सकती हैं। ऐसा होने पर ऐल्डरों व प्रचारक के बीच मतभेदों से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे विश्वासी मसीही हैं या नहीं। इस बात का महत्व कहीं अधिक है कि लोगों में अन्तर *ज़्यों है।* महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग अलग - अलग होते *हैं,* और उनके मतभेदों के कारण झगड़े हो सकते हैं! आम तौर पर लोग उनके साथ ही चलते हैं जो मिजाज़ या व्यज़्तित्व में उनके जैसे हों।

समाधान: गलतियों और पापों से जुड़ी समस्याओं का समाधान करने के लिए कलीसिया के अगुओं को एक दूसरे की कमज़ोरियों को समझने और एक दूसरे की गलतियों को क्षमा करके आत्मिक रूप में बढ़ना सीखना आवश्यक है ताकि वे बार - बार वही गलतियां न करें।

निजी कठिनाइयों से जुड़ी समस्याओं के लिए, सबको चाहिए कि वे अपनी समस्याओं को एक दूसरे को बताएं, एक दूसरे की समस्याओं को समझने को तैयार हों, एक दूसरे को क्षमा करें जब उनसे वह काम न हो जो उन्हें करना चाहिए था, तो एक दूसरे को पूरा समर्थन दें।

ऐल्डरों व प्रचारक के बीच की पृष्ठभूमियों में होने वाले मतभेदों से जुड़ी समस्याओं के कुछ समाधान इस प्रकार हैं: (1) प्रचारकों को यह अपेक्षा करने के लिए तैयार होना चाहिए कि ऐसे मतभेद होंगे और एक मिशनरी के रूप में वह उनसे कैसे निपट सकता है। (2) स्थानीय लोगों, विशेषकर ऐल्डरों को प्रचारक के प्रति दयालु और लिहाज़ रखने वाले होना चाहिए।

व्यज़्तित्व से जुड़ी समस्याओं के लिए: कलीसिया के अगुओं को चाहिए कि वे अच्छा या बुरा या तटस्थ में अन्तर करते हुए आरज़्भ करें। उन्हें जो जायज़ है वही करने की कोशिश करनी चाहिए, किसी का व्यज़्तित्व चाहे कैसा भी ज़्यों न हो। उन्हें दूसरे लोगों को जिनका अलग व्यज़्तित्व है समझने की कोशिश करके उन्हें अलग रहने देना चाहिए।

सज़ा के संघर्ष

समस्या: ऐल्डरों और प्रचारक के बीच का तनाव, चाहे कोई दूसरा भेष धारण करके आ जाए लेकिन वास्तव में यह सज़ा का संघर्ष है। अगुआई करने वालों में झगड़ा होने पर कहीं न कहीं अज़्सर यही प्रश्न होता है कि ''अधिकार किस के पास होगा?''

समाधान: इस समस्या का समाधान केवल यह मानना है कि शज़्ति और अधिकार की इच्छा परमेश्वर के राज्य में अगुओं की विशेषता नहीं होनी चाहिए। कलीसिया में सच्चे चेले का प्रमुख उद्देश्य सेवा करना है (मज़ी 20:20-28)। सज़ा पाने के अभिलाषियों को मन फिराना चाहिए। सज़ा लोलुप प्रचारक का प्रभु की कलीसिया के पुलपिट में कोई स्थान नहीं है, और सज़ा लोलुप ऐल्डर इसी कारण उस कलीसिया के अगुओं के रूप में सेवा करने के अयोग्य ठहरते हैं।

सारांश

ऐल्डरों और प्रचारक में पैदा होने वाली समस्याओं के बारे में इतनी जानकारी से किसी को लगेगा कि बहुत कम जगह इनके सम्बन्ध अच्छे हैं, प्रचारक खुश हैं या ऐल्डर प्रेम करने वाले हैं। यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा। बहुत बार प्रचारक एक ही मण्डली के ऐल्डरों के अधीन कई सालों तक खुशी से काम करता है। अधिकतर प्रचारक बाइबल के प्रति निष्ठावान, कठिन परिश्रमी, दयालु और ऐल्डरों के प्रति विचारवान होते हैं। अधिकतर ऐल्डर योग्य, ईमानदार, विचारशील और प्रचारक का ध्यान करने वाले होते हैं। अधिकतर प्रचारक और ऐल्डर कलीसिया को वैसे ही बनाने के लिए मिलकर काम करते हैं जैसे मसीह चाहता है।

अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में जब पौलुस यरूशलेम में वापस गया, तो उसने इफिसुस के ऐल्डरों को जहां उसने तीन साल तक काम किया था, मिलेतुस में मुलाकात के लिए बुलाया। वहां उसने एक यादगारी ''विदाई प्रवचन'' दिया और अन्त में उसने घुटनों के बल होकर उनके साथ प्रार्थना की।

वे सब रोए; उन्होंने पौलुस को गले लगाया और उसे चूमा, इस बात से दुखी होकर ज़्योंकि उसने कहा था कि वे उसे दोबारा नहीं देखेंगे। फिर वे उसे जहाज़ तक छोड़ने के लिए आए (प्रेरितों 20:36-38)। ऐल्डरों तथा सुसमाचार सुनाने वाले अर्थात इवेंजलिस्ट के बीच में ऐसा ही निकट सम्बन्ध होना चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]ऐल्डरों व प्रचारकों के बीच सम्बन्ध से जुड़ी समस्याओं की इस सूची के लिए मैं डेविड रोपर का ऋणी हूं। [2]देखिए कोय रोपर, ''पूअर लिटल मी: आई ऐम ए प्रीचर,'' *फर्म फाउंडेशन* 83 (11 अक्तूबर 1966): 645.